بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم   نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم   وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
24
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 01 मई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 01 ,1405 हश)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामे सादिक़ हज़रते अक़दस मसीह मौऊद अलै.की सीरत से सच्चाई पर हर क़ीमत पर अमल करने और इस हवाले से मुख़ालिफ़ों को चेलेंज करने के वाक़आत का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 01.05.2026
محلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

اَمّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۔ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ۔ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ग़ुलाम-ए-सादिक़ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै.की सीरत से सच्चाई पर हर क़ीमत पर अमल करने और इस हवाले से मुख़ालिफ़ीन को चैलेंज करने के कुछ वाक़िआत आज बयान करूँगा।

यह वाक़िआ हज़रत मसीह मौऊद अलै.की सीरत में सच्चाई के साथ ग़ैर-मामूली वाबस्तगी (विशेषश्रद्धा), जुर्अत-ए-इज़हार (अभिव्यक्ति का सहस) और मुख़ालिफ़ीन को खुले मैदान में ललकारने का एक निहायत जानदार नमूना पेश करता है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: जब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने आप अलै.पर कुफ़्र और झूठ जैसे संगीन इल्ज़ामात लगाए, तो आप अलै.ने महज़ दिफ़ाअ (बचाओ) पर इक्तिफ़ा नहीं किया, बल्कि पूरे यक़ीन और वक़ार के साथ एक फ़ैसलाकुन चैलेंज पेश किया। आप अलै.ने वाज़िह अल्फ़ाज़ में फ़रमाया कि मेरी पूरी ज़िंदगी गवाह है कि मैंने कभी झूठ को इख़्तियार नहीं किया, न आम हालात में और न ही उन नाज़ुक मवाक़िअ पर जब जान, इज़्ज़त और माल बचाने के लिए झूठ बोलना आसान तरीन रास्ता था।

आप अलै.ने बताया कि अदालतों में भी जहाँ वकीलों ने साफ़ कहा कि कामयाबी के लिए झूठ ज़रूरी है वहाँ भी आप अलै.ने सच्चाई को तरजीह दी और नुक़सान बर्दाश्त किया, मगर हक़ को नहीं छोड़ा। इसके बाद आप अलै.ने निहायत ज़ोरदार अंदाज़ में अपने मुख़ालिफ़ को मुख़ातिब करते हुए कहा कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो महज़ इल्ज़ामात पर इक्तिफ़ा न करो, बल्कि क़तई और

रौशन सुबूत पेश करो। क्योंकि एक सच्चा और ख़ुदातरस इंसान कभी बग़ैर तहक़ीक़ के किसी पर कुफ़्र और फ़िस्क़ का इल्ज़ाम नहीं लगाता। यह महज़ दिफ़ाअ नहीं था, बल्कि एक ऐसा अख़लाक़ी और रूहानी मेयार क़ायम करना था जिसमें मुख़ालिफ़ ख़ुद कटहरे में आ खड़ा होता है।

फिर आप अलै.ने बात को एक और बुलंद सतह पर ले जाते हुए एक फ़ैसलाकुन और ग़ैर-मामूली चैलेंज दिया कि आओ, हम दोनों को उस मेयार पर परख लिया जाए जिसे ख़ुद आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और क़ुरआन करीम ने सच्चाई की अलामत क़रार दिया है यानी रूहानी सिदाक़त (सच्चे ख़्वाबों और इलहामात की सच्चाई)।

आप अलै.ने खुलेआम एलान किया कि एक मजलिस मुक़र्रर की जाए, दोनों फ़रीक़ अपने शवाहिद पेश करें, और जिसकी सच्चाई वाज़िह हो जाए उसी वक़्त दूसरे को काज़िब, दज्जाल और झूठा तसलीम कर लिया जाए।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: यहाँ आप अलै.की जुर्अत अपने उरूज पर नज़र आती है। आप अलै.ने फ़रमाया कि अगर मैं इस आज़माइश में झूठा साबित हुआ तो मैं ख़ुद अपने ऊपर लगाए गए तमाम इल्ज़ामात को क़बूल कर लूँगा चाहे वो कुफ़्र हो, दजल हो या फ़रेब। लेकिन अगर ख़ुदा तआला ने मेरी सच्चाई को ज़ाहिर कर दिया, तो फिर क्या तुम में यह हिम्मत है कि अपने ऊपर यही इल्ज़ामात क़बूल करो? यह महज़ अल्फ़ाज़ नहीं थे, बल्कि एक ऐसा खुला, बेलाग और दो-टूक चैलेंज था जिसमें सच्चाई पर कामिल यक़ीन झलक रहा था।

आख़िर में आप अलै.ने बड़े यक़ीन और जलाल के साथ एलान किया कि ख़ुदा तआला ख़ुद फ़ैसला करेगा और वो वक़्त क़रीब है जब हर बुहतान-तराश की हक़ीक़त खुल जाएगी। जो दूसरों को ज़लील करने के लिए उठते हैं, वो ख़ुद ज़िल्लत का निशान बन जाते हैं।

अगर आप तालिब-ए-हक़ बनकर मेरी सवानेह-ज़िंदगी पर नज़र डालें तो आप पर क़तई सुबूतों से यह बात खुल सकती है कि ख़ुदा तआला हमेशा कज़िब की नापाकी से मुझ को महफ़ूज़ रखता रहा है। यहाँ तक कि बाज़ दफ़ाअ अंग्रेज़ी अदालतों में मेरी जान और इज़्ज़त ऐसे ख़तरे में पड़ गई कि सिवाय इस्तेमाल-ए-कज़िब के और कोई सलाह किसी वकील ने मुझको न दी। लेकिन अल्लाह जल्ल शानुह की तौफ़ीक़ से मैं सच के लिए अपनी जान और इज़्ज़त से दस्तबर्दार हो गया। और बसा-औक़ात माल ی मुक़द्दमात में मैंने सच के लिए बड़े-बड़े नुक़सान उठाए। और बसा-औक़ात महज़ ख़ुदा तआला के ख़ौफ़ से अपने वालिद और भाई के बरख़िलाफ़ मैंने गवाही दी और सच को हाथ से न छोड़ा। कौन साबित कर सकता है कि मेरे मुँह से झूठ निकला हो।

फिर जब मैंने महज़ लिल्लाह इंसानों पर झूठ बोलना इब्तिदा से मत्रूक रखा और बारहा अपनी जान और माल को सिदक़ पर क़ुर्बान किया, तो फिर मैं ख़ुदा पर क्यों झूठ बोलता।

हुज़ूर अलै.फ़रमाते हैं कि एक और बात भी ज़रिया-ए-आज़माइश-ए-सादिक़ीन हो जाती है और वो यह कि कभी इंसान किसी ऐसी मुसीबत में मुब्तला हो जाता है कि सिवाय कज़िब के कोई हीला रिहाई का उसे नज़र नहीं आता। तब वो आज़माया जाता है कि आया उसकी सरिश्त में सिदक़ है या कज़िब। हुज़ूर अलै.ने इस हवाले से तीन नमूने अपनी सवानेह से पेश फ़रमाए

नंबर एक: मिर्ज़ा अज़म बेग साहब लाहौरी की कोशिश से दाइर-शुदा मुक़द्दमा दख़ल-ए-मिल्कियत। नंबर दो: मुक़द्दमा डाकख़ाना। और तीसरा वाक़िआ: हुज़ूर अलै.के साहबज़ादे हज़रत मिर्ज़ा

सुलतान अहमद साहब की जानिब से एक हिंदू पर दाइर-कर्दा मुक़द्दमा था जिसमें हज़रत साहबज़ादा साहब ने उस हिंदू पर यह मुक़द्दमा किया था कि उसने हुज़ूर अलै.और आप अलै.के ख़ानदान की ज़मीन पर मकान बना लिया है और मिसमारी का दावा किया गया था। मगर तरतीब-ए-मुक़द्दमा में एक अम्र ख़िलाफ़-ए-वाक़िआ था। चुनाँचे मुख़ालिफ़ीन ने हुज़ूर अलै.का नाम गवाहों की फ़हरिस्त में शामिल करवा दिया कि जो मिर्ज़ा साहब गवाही दें हमें मंज़ूर होगा। हुज़ूर अलै.फ़रमाते हैं कि वो मुक़द्दमा मैंने अपने हाथों से महज़ रआयत-ए-सिदक़ की वजह से ख़ुद ख़राब किया और सच्चाई को मुक़द्दम (सबसे ऊपर) रखकर माल के नुक़सान को पेश रखा।

अब ऐ हज़रत शेख़ साहब यानी मौलवी साहब को मुख़ातिब करके आप अलै.फ़रमाते हैं कि अगर आपके पास भी इस दर्जे के इब्तिला की कोई नज़ीर हो जिसमें आपकी जान और आबरू और माल रास्त-गोई (सच बोलने) की हालत में बरबाद होता आपको दिखाई दिया हो, और आपने सच को न छोड़ा हो और माल और जान की कुछ परवाह न की हो तो लिल्लाह वो वाक़िआ अपना मअ उसके कामिल सुबूत के पेश कीजिए। वरना मेरा तो यह एतिक़ाद है कि इस ज़माने के अक्सर मुल्लाँ और मौलवियों की बातें ही बातें हैं, वरना एक पैसे पर ईमान बेचने को तैयार हैं। क्योंकि हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आख़िरी ज़माने के मौलवियों को बदतरीन ख़लाइक़ बयान फ़रमाया है, और आपके मुजद्दिद साहब नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान मरहूम "हुजज-उल-किरामह" में तसलीम कर चुके हैं कि वो आख़िरी ज़माना यही ज़माना है। पस ऐसे मौलवियों का जुहद व तक़्वा बग़ैर सुबूत क़बूल करने से आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के फ़रमूदा की तकज़ीब लाज़िम आती है। पस आप नज़ीर पेश करें, और अगर पेश न कर सकें तो साबित होगा कि आपके पास सिर्फ़ रास्त-गोई का दावा है मगर कोई दावा बे-इम्तिहान क़बूल के लायक़ नहीं। अंदरूनी हाल आपका ख़ुदा तआला को मालूम होगा कि आप कभी कज़िब और इफ़्तिरा की नजासत से मलव्वस हुए या नहीं यह तो मैं नहीं जानता, अल्लाह को मालूम होगा, ग़ैब का इल्म तो वही जानता है। या उन्हें मालूम होगा जो आपके हालात से वाक़िफ़ हों। जो शख़्स इब्तिला के वक़्त सादिक़ निकलता है और सच को नहीं छोड़ता, उसके सिदक़ पर मुहर लग जाती है। और अगर यह मुहर आपके पास है तो पेश करें, वरना ख़ुदा तआला से डरें ऐसा न हो कि वो आपकी पर्दादरी करे।

हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बनसरिहिल अज़ीज़, ने फ़रमाया कि हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब को जब मालूम हुआ कि मुख़ालिफ़ फ़रीक़ ने हज़रत मसीह मौऊद अलै.की गवाही तलब की है, तो चूँकि वो जानते थे कि हुज़ूर अलै.कभी झूठ नहीं बोलेंगे, इसलिए उन्होंने मुक़द्दमा ही वापस ले लिया।

हुज़ूर अनवर ने इस मकान की तारीख़ भी बयान फ़रमाई। यह मकान डिप्टी शंकरदास की हवेली कहलाती थी जो इंतिहाई मुतअस्सिब व मुख़ालिफ़ था। इस मकान से हुज़ूर अलै.के मकानात की बेपर्दगी भी होती थी। फिर यह शख़्स नमाज़ के लिए आने-जाने वालों को गालियाँ दिया करता था। जब नमाज़ी हुज़ूर अलै.से उसके रवैये की शिकायत लगाते तो हुज़ूर अलै.फ़रमाते: सब्र करो! शाही कैंप के सामने कोई नहीं ठहर सकता। चुनाँचे देखते ही देखते डिप्टी का हँसता-बसता घर गिरने लगा और वो ख़ुद भी बीमार होकर या किसी तरह वहाँ से चला गया। यह मकान हज़रत शेख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहब रज़ि. ने ख़रीद लिया। 1932 ء में इस मकान में सदर अंजुमन अहमदिया के दफ़ातिर का क़याम

अमल में आया और इसका इफ़्तिताह भी सैयदना हज़रत मुसलह मौऊद रज़ि.ने फ़रमाया। ख़ुदा की क़ुदरत है कि वो शख़्स जो बड़ी रुऊनत से मस्जिद में आने-जाने वालों को रोका करता था आज ख़ुदा की तक़दीर ने उसके घर को, उस सारे इलाक़े को मस्जिद बना दिया है। यह मकान अब मस्जिद अक़सा का हिस्सा है।

इन मुख़्तलिफ़ मुक़द्दमात का ज़िक्र करते हुए हज़रत शेख़ नूर अहमद साहब रज़ि. बयान करते हैं: मेरे वालिद साहब और ताया साहब ज़िक्र किया करते थे कि हमारा गाँव मिर्ज़ा साहब की तअल्लुक़ादारी में था कुछ अर्से हुज़ूर अलै.अपने वालिद साहब के मुख़्तार रहे और हमारे साथ भी बाज़ पेशियों में जाना हुआ। आप अलै.हमेशा रास्ती का पहलू इख़्तियार करते, चाहे मुक़द्दमे को किसी क़दर नुक़सान पहुँच जाता।

हज़रत मियाँ अल्लाह यार साहब रज़ि. बयान करते हैं: जब हज़रत साहब अलै.की उम्र पच्चीस-तीस साल थी, आप अलै.के वालिद साहब का अपने मौरूसियों से दरख़्त काटने पर एक तनाज़ुआ हो गया। आप अलै.के वालिद साहब का नज़रिया यह था कि ज़मीन हमारी होने की वजह से दरख़्त भी हमारी मिल्कियत हैं। आप अलै.मुक़द्दमे की पैरवी के लिए गुरदासपुर तशरीफ़ ले गए आप अलै.के हमराह दो गवाह भी थे। हज़रत अक़दस अलै.ने रास्ते में गवाहों से फ़रमाया: अबाजान यूँ ही ज़बरदस्ती करते हैं दरख़्त भी तो खेती की तरह होते हैं। यह ग़रीब लोग हैं, अगर काट लिए तो क्या हरज है। मैं तो अदालत में यह नहीं कह सकता कि यह मुतलक़न हमारे ही हैं हाँ! हमारा हिस्सा हो सकता है। मौरूसियों को भी आप अलै.पर बेहद एतिमाद था। जब मजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा तो उन्होंने बिला-तअम्मुल जवाब दिया कि ख़ुद मिर्ज़ा साहब से मालूम कर लें। आप अलै.ने दरयाफ़्त किए जाने पर फ़रमाया: मेरे नज़दीक दरख़्त खेती की तरह हैं जिस तरह खेती में हमारा हिस्सा है, उसी तरह दरख़्त में भी हमारा हिस्सा है। चुनाँचे आप अलै.के इस बयान पर मजिस्ट्रेट ने मौरूसियों के हक़ में फ़ैसला दे दिया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलै.की ज़िंदगी से सच्चाई के यह कुछ वाक़िआत पेश किए हैं। आप अलै.ने हमेशा सच्चाई को मुक़द्दम रखा और झूठ के क़रीब भी नहीं गए। आप अलै.ने अपने मानने वालों को भी हमेशा सच्चाई पर क़ायम रहने की तलक़ीन फ़रमाई। बल्कि शराइत-ए-बैअत में भी यह लिखा हुआ है कि हम झूठ से नफ़रत करेंगे और सच्चाई पर क़ायम रहेंगे। पस हमारा यह फ़र्ज़ है कि सच्चाई को अपना ख़ास वस्फ़ बनाएँ। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक– 9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब – 18001032131